Val II, Issue:VIII, Sept 2012

ISSN : 2230-7850

Indian Streams Research Journal

Impact Factor 0.2105

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N. Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 8, Sept 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

निराला के काव्य में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना

संजय नाईनवाड

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
एस.बी. झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी

प्रस्तावना :–

बंगाल प्रांत के मेदनीपुर जिले के महिषादल में सन् 1886 में जन्में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित साहित्यकार है। उनका काव्य विविधताओं से अटा पड़ा है। अपने उपनाम के सामान ही वे व्यक्तित्व एवं कृतित्व से निराले थे। उन्होंने अपने समकालीन कवियों से अलग राहों को अपनाते हुए कल्पना का कम से कम सहारा लेकर अधिक से अधिक यथार्थ को काव्य में वरितया दी। इस कारण आधुनिक हिंदी साहित्य के क्रान्तिकारी और विद्रोही कवि के रूप में निराला को जाना जाता है। निराला छायावाद के चार प्रमुख आधार स्तंभों में से एक है। निराला को मुक्त छंद के प्रयोक्ता के रूप में माना जाता है। निराला की राष्ट्रीयता भारत की भूमि में उगती है, पननती है, लेकिन इसमें प्रफुल्लित एवं पल्लवित होती बहुत दूर जाकर समस्त मानवीयता को अपने में समेट लेती है। इस कारण उनकी राष्ट्रीयता का फलक बहुत व्यापक है। उनकी अनामिका भाग– 1, 2, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अपरा, अराधना, अर्चना तथा वर्षागीत आदि प्रसिध्द काव्य कृतियॉ है।

निराला की विचारधारा और भावभूमि का विकास राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर हुआ है। निराला एक ऐसे कवि थे, जिनकी आत्मा सदैव राष्ट्र विकास के लिए चिंतित रहती थी। स्वतंत्रता आंदोलन की ज्योति उनके काव्य में निरंतर प्रज्वलित रही है, यह दिखाई देता है। निराला ने देश विकास, कल्याण और स्वतंत्रता के लिए समग्र क्रान्ति की पुकार लगाई। इस क्रान्ति के लिए वर्ग, जाति, संप्रदायों के सभी विभेदों को खत्म करके तमाम भारतियों ने एक होकर संघर्ष करने की जरूरत है, ऐसा उनका विचार था। नव जीवन के उदय के लिए काल बाह्य परंपराओं को नष्ट करके मनुष्य को कमजोर विश्वासों और आशंकाओं से दूर रहना होगा। उनके ये विचार निम्न पंक्तियों में हम देख सकते है–

''ऑखों में नव जीवन के तु अंजन लगा पुनीत / बिखर झर दे प्राचीन
जीर्ण–शीर्ण जो दीर्ण धरा में प्राप्त करे अवसान / रहें अवशिष्ट सत्य जो स्पष्ट
छोड दे शंकाऍं, रे निर्मल गर्जित वीर उठा केवल निर्मल निर्घोस
दूर उद्दाम वेग से बाधा हर तू कर्कश प्राण / दूर कर के दुर्बल विश्वास।''[1]

निराला भली भॉति जानते थे कि मातृभूमि को शत्रुओं के पंजों से मुक्त करने के लिए वीणा की झंकार और कोमल छंदों की जरूरत नहीं है, बल्कि भैरवी की भेरी के उद्घोष की जरूरत ह इस लिए वे श्यामा को आह्वान करते हुए वे कहते है–

''भौरवी! तेरी झंझा / तभी बजेगी मृत्यु लड़ायेगी जब तुझसे पंजा
लेगी खड्ग और तु खप्पर / उसमें रूधिर भरूॅगा मॉ
मैं अपनी अंजली भर / उंगली के पोरों में दिन गितना ही जाऊॅगा?
बस एक बार और नाच तु श्यामा।''[2]

निराला ने अपने समस्त कार्यों का संचित फल, समस्त साधना मातृभूमि को ही अर्पित की है। अपना तन, मन, धन देकर भी मातृभूमि के लिए बलि चढने में ही अपने जीवन की सार्थकता वे मानते है इसलिए वे कहते है–

''नर जीवन सार्थ सकल / बलि हो तेरे चरणों पर मॉ
मेरे श्रम–संचित सब फल / क्लेदयुक्त अपना तन दुॅगा
मुक्त करूॅगा तुझे अटल / तेरे चरणों पर बलि देकर।''[3]

Please cite this Article as : *संजय नाईनवाड*, *निराला के काव्य में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना* : **Indian Streams Research Journal (Sept. ; 2012)**

निराला ने भारतीय समाज की एकता का सपना देखा था। यहॉ की तमाम जनता आपसी विरोध, वैमनस्य, भेदभाव खत्म कर दे क्योंकि उससे संघर्ष करने की शक्ति खत्म हो जाती है और अलगावाद पनपने लगता है। इसलिए निराला आपसी संघर्षों का विरोध करते हुए कहते है–

''जितनी विरोधी शक्तियों से / हम लडते रहें आपस में
सच मानो खर्च है यह / शक्तियों का व्यर्थ।''[4]

विजयेद्र स्नातक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' इस ग्रंथ में निराला की राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता पर विचार व्यक्त करते हुए कहते है, ''तुलसीदास कविता में निराला तुलसी के जीवन वृत्त पर प्रकाश न डालकर उसके मानव पक्ष का चित्रण किया है जो तत्कालीन परिवेश को उद्घाटित करता है। भारत के सांस्कृतिक ह्रास के पुनरूध्दार की प्रेरणा तुलसी को प्रकृति के ही माध्यम से मिलती है।''[5]

डा. भगिरथ मिश्र निराला की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना पर विचार व्यक्त करते हुए कहते है, ''तुलसीदास में कवि ने अपने समय की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय परिस्थिति का समग्र चित्र ऑका है। देश का सांस्कृतिक पतन, उसकी राजनीतिक जीर्णावस्था, कवि को विह्वल कर देती है। और इस तिमिर से पार होने की उसकी महत्वाकांक्षा देश को उत्थान का संदेश देती है।''[6]

कवि निराला अपनी तमाम रचनाओं के माध्यम से सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने के अकांक्षी है। कवि ने साम्प्रदायिक सद्भाव और भाई–चारा की पवित्र भावना को निर्माण कर आपसी विभेदों को समाप्त करने की भावना कवि की कविता 'जागो फिर एक बार' में व्यक्त होती है–

''बहु सुमन बहु रंग, निर्मित एक सुंदर हार / एक ही कर से गुँथा उर एक शोभा भार
गंध एक अरबिन्द नंदन विश्व बंदन सार / अखिल उर रंजन एक अनिल उदार।''[7]

निराला के 'दिल्ली' कविता में देश के अतीत गौरव के साथ वर्तमान दुर्दशा का चित्रण किया है। 'यमुना के प्रति' कविता में कवि ने बडे ही मार्मिक एवं ह्रदय स्पर्शी ठंग से इस देश के विस्मृत एवं अतीत का दिग्दर्शन कराया है इस कविता में यमुना हमारे सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक बन जाती है।

''बता कहॉ अब वह वंशीवट? / कहॉ गए नटनागर श्याम?
चलो चरणों का व्याकुल पनघट / कहॉ आज वह वृन्दाधाम?[8]

इस राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक गौरवगान के पीछे एक भावना थी.....''यह जिवन्त अतीत की खोज का प्रयास था.....वे मूल्यों–कर्मनिष्ठा, ज्ञान, सत्य, साधना, सहिष्णुता वीरभोग्या वसुन्धरा को सहेजना व सॅवारना चाहते थे जो आज भी हमारे आदर्श और प्रेरक बन सकते है। वस्तुतः यह अतीत का गान नहीं था अपितु हमारी संस्कृति और सभ्यता का अख्यान था।''[9]

उपरोक्त विवेचन पर सार रूप में विचार किया जाए तो हम यह कह सकते है कि निराला अपने समय की सामाजिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों से पूर्णतः परिचित और प्रभावित थे इतना ही नहीं बल्कि अपने काव्य के माध्यम से उसके निर्माण के लिए सक्रिय योगदान भी दिया। कविता के माध्यम से इस कवि ने देश के स्वर्णीम अतीत के गौरव गीत गुँजाऍ, सोये राष्ट्र को जगाने के लिए जागरण का शंखनाद किया। इस प्रकार निराला ने अपने काव्य के माध्यम से अपने साहित्यकार के दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह किया।

संदर्भ

1.उद्बोधन, 'अनामिका', निराला रचनावली भाग–2 पृ. 92, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2.आह्वाहन, 'परिमल', निराला रचनावली भाग–1, पृ. 73, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3.नर जीवन के सकल सार्थ 'निराला रचनावली भाग–1, पृ. 206, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4.उद्बोधन, 'अनामिका', निराला रचनावली, भाग–2, पृ 92, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5.हिंदी साहित्य का इतिहास, विजयेंद्र स्नातक, पृ. 259, साहित्य अकादमी, दिल्ली, प्र. सं. 2009
6.निराला काव्य का अध्ययन, भगिरथ मिश्र, पृ. 67, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वि. सं. 1973
7.जागो फिर एक बार, 'परिमल' भाग–1, पृ. 110 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
8.यमुना के प्रति, 'परिमल' निराला रचनावली–भाग 2, पृ. 41 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9.डॉ. रमेशचन्द्र शर्मा, 'हिंदी साहित्य का इतिहास', पृ. 303, विद्या प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ सं. 2008

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal

For All Subjects

Dear Sir/Madam,

We invite original unpublished research paper. Summary of Research Projetc, Theses, Books and Books Review of publication, You will be pleased to know that our journals are..

Associated and Indexed, India

- OPEN J-GATE
- International Scientific Journal Consortium Scientific

Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- DOAJ
- EBSCO
- Index Copernicus
- Academic Journal Database
- Publication Index
- Scientific Resources Database
- Recent Science Index
- Scholar Journals Index
- Directory of Academic Resources
- Elite Scientific Journal Archive
- Current Index to Scholarly Journals
- Digital Journals Database
- Academic Paper Database
- Contemporary Research Index

Indian Streams Research Journal
258/34, Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact:- 9595359435
E-Mail- ayisrj@yahoo.in / ayisrj2011@gmail.com
Website:- www.isrj.net